ई–बुलेटिन

कृषिउद्यमी

प्रतीयमान अनुभव को बांटने वाला मंच

खंड – VI अंक – V अगस्त, 2014

प्रत्येक कृषक द्वारा बेहतर कृषि

इस अंक में:

- मलावी में वनस्पती निदानशाला
- इस माह के कृषि उद्यमी, श्री आर. बालमुरूगन, चिदंबरम–तमिलनाडु
- इस माह का संस्थान स्रिस्टी (SRISTI) – फाउंडेशन पटना, बिहार
- महाराष्ट्र उद्योगिनी पुरस्कार – 2014 श्रीमती कविता जाधव

कृषिउद्यमी की मुफ्त हेल्पलाइन का उपयोग करें

1800 -425-1556

" कृषि उद्यमिता एक ऐसा प्रतीयमान मंच है जहां कृषि उद्यमियों, बैंकरों, कृषि व्यवसाय कंपनियों, नोडल प्रशिक्षण संस्थानों, विस्तार कार्यकर्ताओं, शिक्षाशास्त्रियों, अनुसंधानकर्ताओं तथा कृषि व्यवसाय चिंतकों, जो देश में कृषि उद्यमिता विकास के लिए कार्य कर रहे हैं, के अनुभवों को सबके साथ बांटा जाता है।

मलावी राष्ट्र में वनस्पती निदानशाला

सेल्फ हेल्प अफ्रीका, सी. ए. बी. आई. और कृषि मंत्रालय, मलावी की एक संयुक्त पहल

किसान वनस्पति निदान जानते हुए

FDH बैंक– मलावी राष्ट्र को वनस्पति निदानशाला के लिए आर्थिक सहायता देते हुए

सेल्फ हेल्प अफ्रीका (गोर्टा – सेल्फ हेल्प अफ्रीका) एक गैर सरकारी संगठन (NGO) (अफ्रीका के 10 देशों में संचालित) है, जो अफ्रीका के ग्रामीण क्षेत्रों को गरीबी और भूखमरी से मुक्त करवाना चाहता है। छोटे किसानों की गरीबी और भूखमरी से छुटकारा दिलवाने के लिए उनकी समस्याओं का उद्यमशील हल निकालना इसका उद्देश्य है। पौधों के स्वास्थ्य क्लीनिकों को देशभर में स्थापित करने हेतु सेल्फ हेल्प अफ्रीका, मलावी कृषि, सिंचाई एवं जल विकास मंत्रालय को सहयोग प्रदान करते हुए (CABI) से तकनीकी सहायता प्राप्त कर रहा है। विश्व के निर्धन से निर्धन किसानों को पौधों के कीटों एवं रोगों तथा अन्य समस्याओं से निपटने हेतु कैबी (CABI) द्वारा देशभर में वनस्पती निदानशाला स्थापित किए गए हैं। छोटे गरीब किसानों को, वनस्पती निदानशाला तक पहुँचाने और सलाह दिलवाने के उद्देश्य से स्थानीय सेनाओं के साथ कार्यरत है। मलावी में यह पहल 2013 में आरंभ हुई और अब तक, लिलॉंग्वे, सालिमा निचेऊ और मजिंबा में 36 वनस्पती निदानशाला खोले जा चुके हैं।

वनस्पती निदानशाला की दीर्घकालिकता सुनिश्चित करने हेतु सेल्फ–हेल्प अफ्रीका ने लिलॉंग्वे जिले में की कुछ क्लीनिकों में निजी व सार्वजनिक भागीदारी पर काम करना शुरू लिया है। इस योजना के माध्यम से, एक प्राइवेट कंपनी, एफ.डी.एच.बैंक (स्थानीय बैंक) 3 क्लीनिकों में इस पहल को सहयोग देने पर सहमत हो गए हैं। जिससे लिलॉंग्वे के टी.ए. मसुंबांखुंदा क्षेत्र के 3000 किसानों को इसका लाभ मिलेगा। इस पहल के माध्यम से एफ. डी.एच. बैंक अपने उत्पादों को किसान समुदाय में प्रचारित कर रहा है और इसके बदले में वह बैंक को, किसानों की आवश्यकताओं को समझने और उनके लिए उपयुक्त उत्पाद तैयार करने में भी सहायता करेगा । यहाँ एक लेन–देन की स्थिति उत्पन्न हो चुकी है – जहाँ किसान बैंक के सहयोग से लाभान्वित हो रहे हैं जबकि, बैंक उनक बीच अपने उत्पाद बेचकर अपने व्यापार में वृद्धि कर रहा है। इस मॉडल की सफलता के बाद, बलाका जिले के साथ–साथ करोंगा और चिटिपा में भी अन्य और क्लीनिक भी शीघ्र खुलेंगे जिनका लक्ष्य 10,000 से अधिक किसानों का होगा । अधिक जानकारी के लिए, मिस मॅडालित्सो जेल्डा चिडुमु: E-mail – mchidumu@yahoo.com/ so.chidumu@selfhelpafrica.org. www.selfhelpafrica.org

राष्ट्रीय कृषि प्रबंधन विस्तार संस्थान, कृषि तथा सहयोग विभाग, कृषि मंत्रालय राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक

किसानों के स्वास्थ्य एवं आय के संवर्धन के लिए उत्कृष्ट खाद्य पदार्थ ''स्पिरूलीना'' श्री बालमुरूगन, चिदम्बरम, कडलूरू जिला तमिलनाडु

''स्पिरूलीना'' एक अति सूक्ष्म जलीय जीवाणु होता है जिसे अक्सर शैवाल के रूप में जाना जाता है। सर्पिल (Spiral) आकार के कारण इसका नाम ''स्पिुरूलीना'' पड़ा । ये जीवाणु हमारे मध्य कई लाखों वर्षों से मौजूद हैं परंतु अप. नी ''विशिष्ट पोषक मात्रा'' के कारण हाल ही के वर्षों में यह एक उत्कृष्ट खाद्य पदार्थ के रूप में उभरा है – ऐसा मानना है कृषि– अभियंता श्री बालमुरूगन (38) का। उनके अनुसार ''स्पिुरूलीना'' गोमांस तथा सोयाबीन की अपेक्षा प्रोटीन का एक बेहतर स्रोत है। यह विटामिन B 12 का भी एक निरामिष (non animal) स्रोत है और इसमें बीफ़–लिवर से दुगुनी मात्रा में B 12 पाया जाता है जिसके फलस्वरूप यह शाकाहारी खुराक का एक उत्कृष्ट अंग बन चुका है।

श्री आर बालमुरुगन स्पिरुलिना खेती पे प्रशिक्षण देते हुए

वर्ष 2011 में श्री बालमुरूगन ने स्वैच्छिक जन सेवा संगठन (VAPS) पांडिचेरी में ए.सी. एवं ए.बी.सी. के प्रशिक्षण में भाग लिया । एक कृषि अभियंता होने के नाते उन्होंने एक कस्टम हायरिंग केन्द्र आरंभ करने का निश्चय किया । परंतु स्पिरूलीना फार्म के एक दौरे (विज़िट) ने उनका ध्यान उसके अद्भुत गुणों की ओर आकर्षित किया और स्पिरूलीना की खेती के प्रति उनके रूझान को प्रोत्साहन मिल गया । प्रशिक्षण की समाप्ति के बाद उन्होंने स्पिरूलीना–मार्केटिंग के बारे में बाजार का सर्वेक्षण किया और स्पिरूलीना खेती विषय पर एक तीन दिवसीय कार्यशाला में भाग लिया । तत्पश्चात् अपनी खुद की, 1. 25 की राशि के निवेश से श्री बालमुरूगन ने उन्होंने 'पंबन स्पिरूलीना फ़ार्म'' के नाम से अपनी फ़र्म पंजीकृत करवाई और छोटे स्तर पर स्पिरूलीना की खेती आरंभ की । पहली फसल में ही उन्होंने 50,000 रू. का लाभ कमाया । स्पिरूलीना की खेती में 8.5 से 11 पी.एच का शुद्ध पानी की आवश्यकता होती है। अतः बालमुरूगन ने जलशोधक से युक्त एक विशाल पानी का टैंक बनवाने का निश्चय किया। उन्होंने यूनियन बैंक, चिदंबरम शाखा, तमिलनाडु में 10 लाख रू. की ऋण प्रस्ताव प्रस्तुत किया । शाखा प्रबंधक उनकी इस गतिविधि से काफी प्रभावित हुआ और उसने ऋण मंजूर कर दिया इसके अलावा नाबार्ड ने भी 36 प्रतिशत की राहत (सब्सिडी) प्रदान की। श्री बालमुरूगन कहते हैं – ''कच्चे स्पिरूलीना को खाने योग्य बनाने में, 5 चरणों पर तैयारी करनी पड़ती है जैसे – कटाई, छलनी, प्रेसिंग, उत्सरण, सुखाना और कंडिशनिंग आदि । ये सभी चरण, स्पिरूलीना को दूषित होने से बचाने के लिए आवश्यक होते है।'' श्री बालमुरूगन ने अपने उत्पाद भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक अधिनियम (FSSAI) भारत सरकार के अधीन पंजीकृत करवाए हैं।

स्पिरूलीना एक पोषक पूरक खाद्य पदार्थ है जिससे असंख्य रोगों का इलाज संभव है। 10 गाँवों के 80 ग्रामीण उनके उत्पादों के लाभार्थी हैं। ठीक इसी प्रकार यह मत्स्यिकी, मुर्गीपालन और डेरी फ़र्मों के लिए भी एक महत्वपूर्ण फ़ीड है। श्री बालमुरूगन श्रिंप और मत्स्य फ़ार्मों में स्पिरूलीना पाउडर की सप्लाई कर रहे हैं। वे पड़ोसी किसानों को भी प्रशिक्षण के ज़रिये स्पिरूलीना की खेती के लिए प्रेरित कर रहे हैं । उन्होंने 2 तकनीकी सहायकों को नियुक्त किया है उनकी वार्षिक आय अब 5/– लाख के आसपास है। श्री मुरूगन कहते हैं – '' मैं अधिक से अधिक युवा लोगों को स्पिरूलीना की खेती का प्रशिक्षण देकर उन्हें इस सुपर फूड से आगत करवाना चाहता हूँ , खास तौर पर उन्हें जो गरीबी रेखा से नीचे हैं और कृपोषण का शिकार हैं । मैं अपने भारत को अधिक स्वस्थ और समृद्ध बनाना चाहता हूँ।''

श्री आर. बालमुरूगन

पंबन स्पिरूलीना फार्म नंत्र 644 मरियम्मनकोइल ईस्ट स्ट्रीट, सी. अलंबदी एवं पोस्ट कीरपालयम, चिदंबरम तालुक कड्डलूर जिला,

तमिलनाडु ई–मेल आई.डी. – pambanspirulina@gmail.com मोबाइल नं. 09047536303

ए.सी. एवं ए.बी.सी. प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से मानव संसाधनों का मानव–पूंजी के रूप में रूपांतरण, स्रिस्टी (SRISTI) फाउंडेशन पटना, बिहार

स्रिस्टी (SRISTI) फाउंडेशन एक ऐसा अग्रगामी संगठन है जो 1997 से बिहार में कृषि एवं ग्रामीण विकास के प्रति समर्पित है। यह फाउंडेशन 2002 से ए.सी. एवं ए.सी.बी. योजना कार्यान्वित करता रहा है और इसे 34 बैचों को सफलतापूर्वक प्रशिक्षित किया है। 1, 171 प्रशिक्षित उम्मीदवारों में से, 454 व्यक्तिओं ने अपने कृषि प्रतिष्ठान (वेंचर) स्थापित कर लिये हैं। इनमें कृषि क्लीनिक, कृषि व्यापार केन्द्र, एकीकृत मॉडल फार्म, ग्राहक केन्द्र, पशु चिकित्सा क्लीनिक, डेरी फार्म, वर्मी कम्पोस्ट यूनिट, खाद्य–संसाधन यूनिट बीज–संसाधन यूनिट, मत्स्यिकी, मुर्गीपालन, वनस्पति–उत्पादन इकाइयाँ , खाद्य–संसाधन एवं विपणन, कृषि कंसल्टैंसी एवं प्रशिक्षण केन्द्र आदि शामिल हैं।

श्री विमल किशोर , कृषि उद्यमी इन्हे " किसान श्री अवार्ड' से सन्मानित किया गया है

ए.सी. एवं ए.बी.सी. योजना के दौरान सिस्टी (SRISTI) फाउंडेशन की महत्वपूर्ण गतिविधियाँ –

- नियमित रूप से काउंसलिंग संचालित करना, कृषि उद्यमियों को, प्रमाणन, लाइसेंस प्राप्त करने तथा अन्य सरकारी योजनाओं तहत सुविधा प्राप्त करने हेतु सहायता करना।
- कृषि उद्यमियों को व्यापारियों, किसानों तथा सरकारी अभिकरणों के साथ मार्केट–संपर्क स्थापित करवाने में सहयोग प्रदान करना।
- स्रिस्टी (SRISTI) फाउंडेशन की स्थापना कर, प्रशिक्षुओं को निःशुल्क सदस्यता दिलवाना और उन्हें पुस्तकें तथा अन्य प्रकाशन आसानी से उपलब्ध करवाना।
- समस्याओं एवं प्रगति पर चर्चा करने हेतु त्रैमासिक कृषि उद्यमी सम्मेलन आयोजित करना।
- स्थापित कृषि उद्यमियों के बीच उद्यमशीलता–कौशल को सशक्त बनाने के लिए, पुनश्चर्या पाठ्यक्रम आयोजित करना।

स्रिस्टी फ़ाउंडेशन की विशेष उपलब्धियाँ –

- कुल 1, 171 प्रशिक्षित प्रत्याशियों में से 454 ने 38.77 प्रतिशत की सफलता दर से अपने कृषिवेंचर स्थापित किए ।
- श्री नवीन कुमार मसौर्ती (बी.एच.आर. 1476) को कृषि व विस्तारण में उनके योगदान के लिए बिहार सरकार द्वारा 'किसान श्री' से सम्मानित किया गया । उन्हें पुरस्कार स्वरूप 1,00,000 की राशि तथा प्रशस्ति पत्र प्रदान किए गए ।
- श्री विमल किशोर (बी.एच.आर. 1974) समस्तीपुर जिला, को मत्स्य कल्चर एवं मत्स्य नर्सरी में उनके योगदान के लिए 'किसान श्री' से सम्मानित किया गया । 1, 00, 000 रू. व प्रशस्ति पत्र उन्हें पुरस्कार स्वरूप भेंट किए गए।

श्री अशोक कुमार ठाकुर,
नोडल अधिकारी,

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें –

श्री अशोक कुमार ठाकुर, कार्यकारी अध्यक्ष/नोडल अधिकारी, रेशमी कांप्लेक्स (दैनिक जागरण के ऊपर),
आठवां तल, क़िदवईपुरी, पटना–800001, बिहार, फोन 0612.2530166 मोबाइल 94310 72233
ई–मेल – sristi_foundation@rediffmail.com, Web – www.ssiast.com

''महाराष्ट्र उद्योगिनी पुरस्कार–2014 के तहत रजत–पदक से सम्मानित एक महिला कृषि उद्यमी श्रीमती कविता जाधव

महाराष्ट्र राज्य के सकाल समाचार पत्र लि. महाराष्ट्र तथा मिटकॉन कंसल्टेंसी ने कृषि क्षेत्र में महिला कृषि उद्यमियों के प्रयासों और गुणों को सम्मानित करने के उद्देश्य से संयुक्त रूप से, 2007 में महाराष्ट्र उद्योगिनी पुरस्कार की संकल्पना की । सकाल और मिटकॉन ने 7–8 अगस्त, 2014 को महाराष्ट्र और गोवा राज्य की 22 कृषि उद्यमियों को नामित किया और पुरस्कार समारोह का आयोजन किया। उनमें से कृषि–क्लीनिकों और कृषि विज्ञान केन्द्र (PIRENS) बाभलेश्वर, महाराष्ट्र में प्रशिक्षित एक महिला कृषि उद्यमी श्रीमती कविता जाधव को रजत–पदक से सम्मानित किया गया । यह पुरस्कार उन्हें कृषि –कंसल्टेंसी एवं विस्तारण सेवाओं में उनके सराहनीय योगदान के लिए दिया गया । एक ही छत के नीचे किसानों की समस्त आवश्यकताओं और मांगों की पूर्ति के लिए उन्होंने अहमद नगर जिले के जोगेश्वरी अखाड़ा, राहूरी तालुक में एक विशाल एग्री–शॉपिंग मॉल स्थापित किया । लगभग 2000 किसान उनके नियमित ग्राहक हैं । 350 किसान एस.एम.एस. के जरिये मॉल से जुड़े हैं। श्रीमती कविता जाधव को, प्रबंधन अध्ययन संस्थान अहमदनगर द्वारा 'आदर्श महिला कृषिउद्यमी' पुरसकार से भी सम्मानित किया जा चुका हैं । श्रीमती जाधव से, एग्री शॉपिंग मॉल, जोगेश्वरी अखाड़ा, राहूरी तालुक अहमदनगर जिला में संपर्क किया जा सकता है। उनका मोबाइल नंबर है – 09860118980, ई–मेल jadhav.kavita 1985@gmail.com

विशेषज्ञ क्या कहते हैं

'मैंने बुलेटिन पढ़ा है। यह एक उत्कृष्ट विचार है। इसी प्रकार एक वार्षिक–पुस्तिका भी प्रकाशित कर उसमें सुझाव व सफलता गाथाएँ छापी जा सकती हैं। बाद में उसे एक पाठ्यपुस्तक का रूप दिया जा सकता है। जो ए.बी.एम. में पी.जी.डी. के लिए भी उपयोगी सिद्ध होगी । उसमें कृषि उद्यमियों के प्रयासोंख उनकी सफलता व असफलता से जुड़े अनुभव शामिल किए जाएँ जिससे दूसरों को सबक मिल सके। सफलता गाथाओं को बाद में, वर्गीकृत कर इस पुस्तक में पाठों का रूप दिया जा सकता है। यह एक उत्कृष्ट पहल/शुरूआत है – यह कथन है एक सेवानिवृत्त, भा.प्र.सेवा अधिकारी श्री सुरेश कुमार का, जो महाराष्ट्र राज्य में अतिरिक्त मुख्य सचिव थे और मैनेज के प्रथम महानिदेशक बने ।

www.agriclinics.net वह पोर्टल है जो एसी तथा एबीसी योजना के बारे में सूचना प्रदान करता है। यह पोर्टल पात्रता मानदंडों, प्रशिक्षण संस्थानों, प्रशिक्षण कार्यक्रमों, सहायता कार्यों, वित्त विकल्पों तथा भावी उद्यमियों को सब्सिडी प्रदान करने के संबंध में अद्यतन जानकारी देता है।यह वेबसइट स्थापित कृषि नव उद्यमों, लंबित परियोजनाओं, संबंधित योजनाओं के ब्यौरों से संबंधित सूचना तथा राज्य सरकारों, कृषि विश्वविद्यालयों, बैंकों, प्रशिक्षण संस्थानों तथा कृषि उद्यमियों के लिए उपयोगी अन्य सूचना भी प्रदान करती है।

एग्री क्लीनिकों तथा एग्रीबिजनेस केंद्रों के संबंध में अधिक स्पष्टीकरण के लिए कृपया इस पते पर मेल करें। indianagripreneur@manage.gov.in

''प्रत्येक कृषक द्वारा बेहतर कृषि''

"कृषिउद्यमी" श्री बी श्रीनिवास, आईएएस,
महानिदेशक, द्वारा प्रकाशित

हमसे संपर्क करें:
कृषि उद्यमिता विकास केन्द्र, (सीएडी)
कृषि विस्तार प्रबंधन के राष्ट्रीय संस्थान
(मैनेज), राजेन्द्रनगर, हैदराबाद,पिन-500 030, भारत
वेबसाइट: www.agriclinics.net
हेल्पलाइन नं. : 1800 425 1556 (टोल फ्री)
ईमेल helplinecad@manage.gov.in

प्रमुख संपादक : श्री वी. श्रीनिवास, आईएएस
संपादक : डा. पी. चंद्रशेखर
सहायक संपादक : डा. लक्ष्मीमूर्ति
: सुश्री ज्योति सहारे
हिंदी अनुवाद : डॉ. के. श्रीवल्ली